स्वतंत्रता संग्राम में मुंगेर जिले की जनभागीदारी: एक ऐतिहासिक विश्लेषण

अमित रंजन झा

शोधार्थी, इतिहास विभाग, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल राष्ट्रीय नेताओं के नेतृत्व और प्रमुख राजनीतिक घटनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी वास्तविक शक्ति स्थानीय स्तर पर जनता की सक्रिय भागीदारी में निहित थी। बिहार का मुंगेर जिला उन क्षेत्रों में सम्मिलित है जहाँ ग्रामीण समाज, विद्यार्थी, महिलाएँ, किसान, व्यापारी तथा स्थानीय राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध विभिन्न आंदोलनों में उल्लेखनीय योगदान दिया। प्रस्तुत शोध-लेख का उद्देश्य स्वतंत्रता संग्राम में मुंगेर जिले की जनभागीदारी का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है, ताकि स्थानीय इतिहास के उन आयामों को रेखांकित किया जा सके जिन्हें राष्ट्रीय इतिहास लेखन में अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाया है (चौधरी, 1960)।

यह अध्ययन ऐतिहासिक शोध-पद्धति पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का समन्वित उपयोग किया गया है। शोध के लिए बिहार जिला गजेटियर, अभिलेखीय अभिलेख, समकालीन सरकारी दस्तावेज, स्वतंत्रता सेनानियों से संबंधित उपलब्ध साहित्य तथा इतिहासकारों के प्रामाणिक ग्रंथों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन विशेष रूप से असहयोग आंदोलन (1920–22), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34) तथा भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के दौरान मुंगेर जिले की सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों का मूल्यांकन करता है (सरकार, 1983)।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मुंगेर जिले में राष्ट्रीय आंदोलनों की विचारधारा केवल नगरों तक सीमित नहीं रही, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी व्यापक रूप से पहुँची। किसानों ने औपनिवेशिक नीतियों का विरोध किया, विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में सक्रिय भूमिका निभाई, महिलाओं ने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, सभाओं एवं जुलूसों में भाग लेकर आंदोलन को सामाजिक आधार प्रदान किया, जबकि स्थानीय व्यापारियों एवं बुद्धिजीवियों ने स्वदेशी विचारधारा को सुदृढ़ करने में योगदान दिया। विशेष रूप से 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जिले में जनसहभागिता अधिक व्यापक, संगठित एवं संघर्षशील रूप में दिखाई देती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक नेतृत्व का अभियान न होकर जन-आधारित राष्ट्रीय आंदोलन था।

शोध का निष्कर्ष है कि मुंगेर जिले की जनभागीदारी ने स्वतंत्रता संग्राम को स्थानीय स्तर पर व्यापक सामाजिक समर्थन प्रदान किया तथा राष्ट्रीय आंदोलन को जनआंदोलन के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह अध्ययन स्थानीय इतिहास, क्षेत्रीय राष्ट्रवाद तथा स्वतंत्रता आंदोलन के सामाजिक आधार को समझने में उपयोगी सिद्ध होगा और भविष्य के शोधार्थियों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ सामग्री प्रदान करेगा।

मुख्य शब्द : मुंगेर, स्वतंत्रता संग्राम, जनभागीदारी, बिहार, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, स्थानीय इतिहास।

1. प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम विश्व के सबसे व्यापक और जन-आधारित राष्ट्रीय आंदोलनों में से एक था। यह संघर्ष केवल राजनीतिक सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं था, बल्कि सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय एकता और आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना का भी अभियान था। स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता के पीछे जहाँ एक ओर महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू और डॉ. राजेंद्र प्रसाद जैसे राष्ट्रीय नेताओं का नेतृत्व था, वहीं दूसरी ओर देश के विभिन्न प्रांतों, जिलों और गाँवों की जनता की सक्रिय भागीदारी ने इसे वास्तविक जनांदोलन का स्वरूप प्रदान किया। इसी जनसहभागिता ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध व्यापक राष्ट्रीय प्रतिरोध को संभव बनाया (बिपन चंद्र, 2009)।

बिहार स्वतंत्रता आंदोलन का एक प्रमुख केंद्र रहा, जहाँ चंपारण सत्याग्रह से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक अनेक ऐतिहासिक घटनाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन को नई दिशा प्रदान की। इसी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में मुंगेर जिले का विशेष महत्व है। गंगा तट पर स्थित यह जिला प्राचीन काल से ही राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। औपनिवेशिक काल में यहाँ की सामाजिक संरचना, शैक्षिक गतिविधियों तथा व्यापारिक संपर्कों ने राष्ट्रीय विचारों के प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया। परिणामस्वरूप मुंगेर के नगरों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ और विभिन्न वर्गों के लोगों ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय योगदान दिया (झा, 2008)।

मुंगेर जिले में स्वतंत्रता संग्राम की विशेषता यह थी कि इसमें समाज के विविध वर्गों—किसानों, विद्यार्थियों, महिलाओं, व्यापारियों, शिक्षकों तथा स्थानीय राजनीतिक कार्यकर्ताओं—ने अपने-अपने स्तर पर भागीदारी निभाई। असहयोग आंदोलन के दौरान विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षण संस्थानों के समर्थन और जनसभाओं के आयोजन में स्थानीय जनता सक्रिय रही। सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय ब्रिटिश शासन की नीतियों के विरुद्ध जनविरोध और राजनीतिक जागरूकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इसी प्रकार भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जिले के अनेक क्षेत्रों में जनप्रतिरोध, सभाओं, जुलूसों और प्रशासनिक विरोध के रूप सामने आए, जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को स्थानीय स्तर पर सशक्त आधार प्रदान किया।

यद्यपि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर व्यापक इतिहास लेखन उपलब्ध है, तथापि अधिकांश अध्ययन राष्ट्रीय स्तर की घटनाओं और प्रमुख नेताओं तक सीमित रहे हैं। जिला-स्तरीय आंदोलनों तथा स्थानीय जनभागीदारी का अपेक्षित विश्लेषण अपेक्षाकृत कम हुआ है। विशेष रूप से मुंगेर जिले की भूमिका पर केंद्रित शोध सीमित संख्या में उपलब्ध हैं। इस कारण स्थानीय इतिहास के अनेक महत्वपूर्ण पक्ष अभी भी समुचित रूप से प्रकाश में नहीं आ सके हैं। प्रस्तुत अध्ययन इसी रिक्तता को भरने का प्रयास करता है तथा मुंगेर जिले की जनभागीदारी का ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों में विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि स्वतंत्रता संग्राम की सफलता केवल राष्ट्रीय नेतृत्व का परिणाम नहीं थी, बल्कि स्थानीय समाज की व्यापक सहभागिता और सामूहिक संघर्ष का भी प्रतिफल थी।

2. साहित्य समीक्षा

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर उपलब्ध इतिहासलेखन अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी है। विभिन्न इतिहासकारों ने इस आंदोलन का अध्ययन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा वैचारिक दृष्टिकोणों से किया है। प्रारंभिक इतिहासलेखन में राष्ट्रीय नेताओं, प्रमुख आंदोलनों और औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राजनीतिक संघर्ष को केंद्र में रखा गया, जबकि बाद के अध्ययनों में क्षेत्रीय इतिहास, स्थानीय नेतृत्व तथा जनसामान्य की भागीदारी को भी महत्वपूर्ण विषय के रूप में स्वीकार किया गया। इस परिवर्तन ने यह स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता संग्राम की सफलता केवल शीर्ष नेतृत्व का परिणाम नहीं थी, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय स्थानीय समाज की सहभागिता ने भी इस संघर्ष को व्यापक जनाधार प्रदान किया (मजूमदार, 1963)।

स्वतंत्रता संग्राम के राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में इतिहासकारों ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के विकास, जनआंदोलनों की प्रकृति तथा औपनिवेशिक शासन की नीतियों का विस्तृत विश्लेषण किया है। इन अध्ययनों से यह ज्ञात

होता है कि बीसवीं शताब्दी के राष्ट्रीय आंदोलनों ने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को एक साझा राजनीतिक उद्देश्य से जोड़ा। विशेष रूप से असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन ने ग्रामीण भारत में राष्ट्रीय चेतना का अभूतपूर्व विस्तार किया। हालांकि अधिकांश राष्ट्रीय स्तर के अध्ययनों में स्थानीय जिलों की विशिष्ट परिस्थितियों और उनकी स्वतंत्र भूमिका पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है।

बिहार के स्वतंत्रता आंदोलन पर भी अनेक शोध उपलब्ध हैं, जिनमें चंपारण सत्याग्रह, किसान आंदोलनों, समाजवादी राजनीति तथा भारत छोड़ो आंदोलन की विशेष भूमिका का विश्लेषण किया गया है। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि बिहार राष्ट्रीय आंदोलन का एक सशक्त केंद्र था, जहाँ किसानों, विद्यार्थियों, महिलाओं और स्थानीय नेतृत्व ने व्यापक स्तर पर आंदोलन को गति प्रदान की। बिहार के विभिन्न जिलों की राजनीतिक सक्रियता ने राष्ट्रीय आंदोलन को ग्रामीण समाज तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। फिर भी अधिकांश शोध चंपारण, पटना, शाहाबाद अथवा सारण जैसे क्षेत्रों पर अधिक केंद्रित रहे हैं, जबकि अन्य जिलों के योगदान पर अपेक्षाकृत सीमित कार्य उपलब्ध है (मिश्र, 1988)।

मुंगेर जिले से संबंधित उपलब्ध साहित्य मुख्यतः जिला गजेटियर, स्थानीय इतिहास, स्मृति-ग्रंथों तथा स्वतंत्रता सेनानियों के जीवनवृत्त तक सीमित है। इन स्रोतों में जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रशासनिक विकास तथा कुछ प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों का उल्लेख अवश्य मिलता है, किंतु स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न सामाजिक वर्गों की सामूहिक जनभागीदारी का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन बहुत कम दिखाई देता है। विशेष रूप से किसानों, महिलाओं, विद्यार्थियों, व्यापारियों तथा ग्रामीण समाज की भूमिका को एकीकृत दृष्टि से समझने का प्रयास अपेक्षाकृत दुर्लभ है। उपलब्ध साहित्य प्रायः वर्णनात्मक स्वरूप का है और उसमें घटनाओं के सामाजिक, राजनीतिक तथा ऐतिहासिक विश्लेषण का अभाव दिखाई देता है।

पूर्ववर्ती अध्ययनों की एक प्रमुख सीमा यह है कि उनमें स्थानीय स्तर पर स्वतंत्रता आंदोलन के संगठनात्मक स्वरूप, जनसहभागिता की प्रकृति तथा विभिन्न वर्गों के परस्पर संबंधों का पर्याप्त मूल्यांकन नहीं किया गया है। अधिकांश शोध राष्ट्रीय घटनाओं के स्थानीय प्रभावों का उल्लेख तो करते हैं, परंतु यह नहीं बताते कि स्थानीय जनता ने उन आंदोलनों को किस प्रकार आत्मसात किया और उन्हें क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुरूप कैसे विकसित किया। इसके अतिरिक्त, अनेक अध्ययनों में अभिलेखीय स्रोतों, जिला-स्तरीय दस्तावेजों और स्थानीय समाचार-पत्रों का सीमित उपयोग किया गया है, जिससे स्थानीय इतिहास का समग्र चित्र उभरकर सामने नहीं आ पाता।

उपलब्ध साहित्य के समग्र अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मुंगेर जिले की जनभागीदारी पर केंद्रित एक समग्र ऐतिहासिक अध्ययन की आवश्यकता बनी हुई है। यही इस शोध का प्रमुख **शोध-अंतर** (Research Gap) है। प्रस्तुत अध्ययन स्वतंत्रता संग्राम में मुंगेर जिले के विभिन्न सामाजिक वर्गों की भागीदारी, स्थानीय नेतृत्व, जनसंगठन, राजनीतिक चेतना तथा औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध प्रतिरोध के विविध स्वरूपों का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करेगा। साथ ही, यह शोध राष्ट्रीय इतिहास और स्थानीय इतिहास के मध्य विद्यमान अंतर को कम करने का प्रयास करेगा तथा मुंगेर जिले के योगदान को स्वतंत्रता संग्राम के व्यापक परिप्रेक्ष्य में स्थापित करने का प्रयास करेगा।

3. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य स्वतंत्रता संग्राम में मुंगेर जिले की ऐतिहासिक भूमिका का समग्र विश्लेषण करना है। विशेष रूप से विभिन्न सामाजिक वर्गों—जैसे किसान, विद्यार्थी, महिलाएँ, व्यापारी एवं स्थानीय नेतृत्व—की जनभागीदारी का अध्ययन, स्थानीय स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान का मूल्यांकन तथा स्वतंत्रता आंदोलन के सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना इस अध्ययन का प्रमुख लक्ष्य है।

4. शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध **ऐतिहासिक शोध पद्धति** (Historical Research Method) पर आधारित है, जिसका उद्देश्य स्वतंत्रता संग्राम में मुंगेर जिले की जनभागीदारी का तथ्यपरक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। ऐतिहासिक शोध का मूल उद्देश्य अतीत की घटनाओं का उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर पुनर्निर्माण करना तथा उनके कारणों, स्वरूप और प्रभावों का निष्पक्ष विश्लेषण प्रस्तुत करना होता है। इसी दृष्टिकोण के अंतर्गत इस अध्ययन में मुंगेर जिले के स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित घटनाओं, व्यक्तियों और सामाजिक प्रक्रियाओं का क्रमबद्ध परीक्षण किया गया है (गोयल, 1988)।

शोध में **वर्णनात्मक** (Descriptive) तथा **विश्लेषणात्मक** (Analytical) दोनों दृष्टिकोणों का उपयोग किया गया है। वर्णनात्मक पद्धति के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख घटनाओं, स्थानीय आंदोलनों तथा स्वतंत्रता सेनानियों की गतिविधियों का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया गया है। वहीं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि मुंगेर जिले में विभिन्न सामाजिक वर्गों की भागीदारी किन परिस्थितियों में विकसित हुई तथा उसका स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर क्या प्रभाव पड़ा। इससे केवल घटनाओं का विवरण ही नहीं, बल्कि उनके ऐतिहासिक महत्व का भी समुचित मूल्यांकन संभव हो सका है।

इस अध्ययन में **प्राथमिक स्रोतों** को विशेष महत्व दिया गया है, क्योंकि ये शोध की प्रामाणिकता का आधार प्रदान करते हैं। प्राथमिक स्रोतों में बिहार राज्य अभिलेखागार, राष्ट्रीय अभिलेखागार, *Bihar District Gazetteers: Munger*, समकालीन समाचार-पत्र, औपनिवेशिक सरकार के प्रशासनिक प्रतिवेदन, न्यायिक अभिलेख, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अभिलेख तथा उपलब्ध सरकारी दस्तावेजों का उपयोग किया गया है। इन स्रोतों के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित समकालीन घटनाओं, सरकारी नीतियों तथा स्थानीय जनसहभागिता के स्वरूप को समझने का प्रयास किया गया है।

इसके अतिरिक्त, शोध को व्यापक ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करने के लिए **द्वितीयक स्रोतों** का भी उपयोग किया गया है। इनमें स्वतंत्रता संग्राम पर प्रकाशित प्रामाणिक पुस्तकें, शोध-पत्र, शोध-प्रबंध, इतिहास विषयक जर्नल तथा विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों द्वारा प्रकाशित अध्ययन शामिल हैं। इन स्रोतों के तुलनात्मक अध्ययन से विभिन्न इतिहासकारों के विचारों का विश्लेषण किया गया है तथा उपलब्ध तथ्यों का आलोचनात्मक परीक्षण किया गया है। प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के समन्वित उपयोग से शोध की विश्वसनीयता, वस्तुनिष्ठता और ऐतिहासिक प्रामाणिकता सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है (महाजन, 2007)।

5. मुंगेर जिले का ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिचय

मुंगेर जिला बिहार के प्राचीनतम और ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है। यह क्षेत्र केवल अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण ही नहीं, बल्कि अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, राजनीतिक परंपरा और सामाजिक चेतना के कारण भी भारतीय इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है। गंगा नदी के दक्षिणी तट पर अवस्थित मुंगेर प्राचीन अंग महाजनपद का अभिन्न अंग रहा है तथा विभिन्न ऐतिहासिक कालों में यह अनेक शक्तिशाली राजवंशों के प्रशासनिक और सामरिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ। मौर्य, गुप्त, पाल, शेरशाह सूरी और मुगल शासन के दौरान इस क्षेत्र का राजनीतिक महत्व निरंतर बना रहा। मध्यकाल में निर्मित मुंगेर का किला आज भी इस क्षेत्र की ऐतिहासिक गरिमा का साक्षी है। सामरिक दृष्टि से यह किला पूर्वी भारत के महत्वपूर्ण दुर्गों में गिना जाता था, जहाँ से गंगा के जलमार्ग और आसपास के विस्तृत भूभाग पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया जा सकता था। यही ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आगे चलकर औपनिवेशिक काल में भी मुंगेर को एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक और सैन्य केंद्र के रूप में स्थापित करती है (हंटर, 1877)।

अंग्रेजी शासन की स्थापना के पश्चात मुंगेर का महत्व और अधिक बढ़ गया। ब्रिटिश प्रशासन ने इस क्षेत्र को राजस्व संग्रह, कानून-व्यवस्था तथा सैन्य गतिविधियों के लिए एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में

विकसित किया। प्रशासनिक पुनर्गठन, भूमि व्यवस्था में परिवर्तन तथा औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों का स्थानीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। स्थायी बंदोबस्त, कर निर्धारण तथा कृषि उत्पादन पर बढ़ते सरकारी नियंत्रण के कारण किसानों और ग्रामीण समुदायों में असंतोष की भावना विकसित होने लगी। दूसरी ओर, परिवहन और संचार के साधनों के क्रमिक विस्तार, रेलवे के विकास तथा प्रशासनिक कार्यालयों की स्थापना ने मुंगेर को बिहार के अन्य क्षेत्रों तथा राष्ट्रीय राजनीतिक गतिविधियों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित विचार, समाचार और राजनीतिक गतिविधियाँ अपेक्षाकृत तीव्र गति से स्थानीय समाज तक पहुँचीं।

मुंगेर की सामाजिक संरचना भी स्वतंत्रता आंदोलन के विकास में एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुई। यहाँ कृषि पर आधारित ग्रामीण समाज के साथ-साथ व्यापारियों, दस्तकारों, शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा नवशिक्षित मध्यमवर्ग का भी प्रभाव था। सामाजिक विविधता के बावजूद राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान विभिन्न समुदायों के बीच सहयोग और सहभागिता की भावना विकसित हुई। स्थानीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं, सार्वजनिक सभाओं, स्वदेशी संगठनों तथा राष्ट्रीय शिक्षा से जुड़े प्रयासों ने जनता में राजनीतिक जागरूकता का विस्तार किया। विशेष रूप से बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गतिविधियों तथा गांधीवादी विचारधारा के प्रभाव से मुंगेर में राष्ट्रीय चेतना का नया वातावरण निर्मित हुआ। यह चेतना केवल राजनीतिक अधिकारों की माँग तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामाजिक सुधार, स्वावलंबन, स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग और राष्ट्रीय एकता जैसे मूल्यों से भी जुड़ गई (चंद्र, मुखर्जी, मुखर्जी, महाजन, पाणिक्कर एवं महाजन, 2016)।

स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों में मुंगेर जिले की भूमिका निरंतर विकसित होती रही। असहयोग आंदोलन के समय स्थानीय विद्यार्थियों ने सरकारी शिक्षण संस्थानों के बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा के समर्थन में सक्रिय भागीदारी निभाई। अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं और स्थानीय नेताओं ने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, खादी के प्रचार तथा जनसभाओं के आयोजन के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान औपनिवेशिक कानूनों के विरोध और राजनीतिक सभाओं में स्थानीय नागरिकों की भागीदारी उल्लेखनीय रही। इसके अतिरिक्त 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में मुंगेर जिले के अनेक ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जनप्रतिरोध के विविध स्वरूप देखने को मिले, जिनसे यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्रीय आंदोलन यहाँ केवल कुछ नेताओं तक सीमित नहीं था, बल्कि व्यापक जनसमर्थन प्राप्त कर चुका था। इस जनसक्रियता ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध राजनीतिक चेतना को मजबूत किया और स्वतंत्रता आंदोलन को स्थानीय स्तर पर नई ऊर्जा प्रदान की।

इतिहास लेखन की दृष्टि से मुंगेर का महत्व केवल इस बात में नहीं है कि यहाँ स्वतंत्रता आंदोलन की घटनाएँ घटित हुईं, बल्कि इस तथ्य में भी है कि यह जिला स्थानीय समाज और राष्ट्रीय राजनीति के बीच सक्रिय संवाद का माध्यम बना। यहाँ के किसानों, विद्यार्थियों, व्यापारियों, महिलाओं तथा बुद्धिजीवियों ने अपने-अपने स्तर पर स्वतंत्रता संघर्ष को सामाजिक आधार प्रदान किया। इन वर्गों की सहभागिता यह प्रमाणित करती है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वास्तविक स्वरूप जनआधारित था, जिसमें स्थानीय समाज की भूमिका राष्ट्रीय नेतृत्व के समान ही महत्वपूर्ण थी। इसलिए मुंगेर जिले का ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन केवल क्षेत्रीय इतिहास को समझने का प्रयास नहीं है, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के व्यापक इतिहास में स्थानीय जनभागीदारी के महत्व को स्थापित करने का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इस दृष्टि से मुंगेर का अध्ययन राष्ट्रीय इतिहास के विकेंद्रीकृत स्वरूप को समझने और स्वतंत्रता संग्राम में क्षेत्रीय योगदान के समुचित मूल्यांकन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

6. स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों में मुंगेर की जनभागीदारी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल राष्ट्रीय नेताओं द्वारा संचालित राजनीतिक आंदोलन नहीं था, बल्कि यह भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विकसित जनचेतना और सामूहिक प्रतिरोध का परिणाम था। बिहार का मुंगेर जिला इस जनआंदोलन का एक महत्वपूर्ण केंद्र था, जहाँ स्वतंत्रता संग्राम के प्रत्येक चरण में स्थानीय

जनता ने सक्रिय भागीदारी निभाई। गंगा तट पर स्थित होने तथा ऐतिहासिक, व्यापारिक और शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के कारण मुंगेर में राष्ट्रीय विचार अपेक्षाकृत शीघ्र पहुँचे। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही यहाँ सामाजिक जागृति का वातावरण बनने लगा था, जो बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में राष्ट्रीय आंदोलन के साथ जुड़कर व्यापक राजनीतिक चेतना में परिवर्तित हो गया। स्थानीय कांग्रेस समितियों, शिक्षित वर्ग, व्यापारियों, किसानों तथा विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय नेताओं के आह्वान को स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप जन-आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। परिणामस्वरूप मुंगेर में स्वतंत्रता संग्राम केवल राजनीतिक गतिविधियों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा राष्ट्रीय एकता का भी माध्यम बना (**चंद्र**, 2016)।

सन् 1905 में लॉर्ड कर्ज़न द्वारा किए गए बंग-भंग ने भारतीय राजनीति में नई चेतना का संचार किया। बंगाल के विभाजन का विरोध करते हुए प्रारम्भ हुआ स्वदेशी आंदोलन शीघ्र ही बिहार के विभिन्न भागों, विशेषकर मुंगेर, तक पहुँचा। उस समय मुंगेर बंगाल प्रेसीडेंसी के प्रशासनिक प्रभाव क्षेत्र में था, इसलिए यहाँ स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव स्वाभाविक रूप से दिखाई दिया। स्थानीय व्यापारियों ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का समर्थन किया तथा स्वदेशी उत्पादों के उपयोग को प्रोत्साहित किया। विद्यालयों और सार्वजनिक संस्थाओं में स्वदेशी के महत्व पर व्याख्यान आयोजित किए गए तथा विद्यार्थियों ने प्रभात फेरियों और जनसभाओं के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया। इस आंदोलन ने स्थानीय समाज में आर्थिक आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत किया। मुंगेर में विकसित यही प्रारम्भिक राजनीतिक जागरूकता आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम के अन्य चरणों की आधारशिला बनी (**सरकार**, 1973)।

स्वदेशी आंदोलन के पश्चात होम रूल आंदोलन ने मुंगेर के राजनीतिक वातावरण को नई दिशा प्रदान की। एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक द्वारा प्रारम्भ किए गए इस आंदोलन का उद्देश्य भारतीयों को स्वशासन का अधिकार दिलाना था। यद्यपि इसका प्रमुख प्रभाव दक्षिण और पश्चिम भारत में दिखाई दिया, फिर भी इसके विचारों ने मुंगेर के शिक्षित वर्ग, अधिवक्ताओं, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को गहराई से प्रभावित किया। स्थानीय स्तर पर आयोजित सभाओं, समाचार-पत्रों और वैचारिक चर्चाओं के माध्यम से स्वराज की अवधारणा व्यापक रूप से प्रसारित हुई। लोगों में यह विश्वास विकसित हुआ कि राजनीतिक अधिकार संगठित जनमत और शांतिपूर्ण संघर्ष के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं। इस आंदोलन ने स्थानीय नेतृत्व को उभरने का अवसर दिया और जनता को आगामी राष्ट्रीय आंदोलनों के लिए वैचारिक रूप से तैयार किया (**सील**, 1968)।

सन् 1920 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में प्रारम्भ हुआ असहयोग आंदोलन मुंगेर जिले के इतिहास में जनभागीदारी का एक नया अध्याय सिद्ध हुआ। पहली बार किसानों, विद्यार्थियों, व्यापारियों, शिक्षकों और अधिवक्ताओं ने एक साथ राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय सहभागिता निभाई। सरकारी विद्यालयों और न्यायालयों के बहिष्कार, विदेशी वस्त्रों के परित्याग, खादी के प्रचार तथा जनसभाओं के आयोजन के माध्यम से मुंगेर की जनता ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध अपना असहयोग प्रकट किया। ग्रामीण क्षेत्रों में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने गाँव-गाँव जाकर स्वराज, स्वदेशी और राष्ट्रीय एकता का संदेश पहुँचाया। यद्यपि चौरी-चौरा की घटना के बाद आंदोलन स्थगित कर दिया गया, फिर भी मुंगेर में राष्ट्रीय चेतना का जो विस्तार इस अवधि में हुआ, उसने जिले को आगे आने वाले सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के लिए एक सुदृढ़ सामाजिक एवं राजनीतिक आधार प्रदान किया। इस प्रकार असहयोग आंदोलन ने मुंगेर में स्वतंत्रता संग्राम को सीमित राजनीतिक गतिविधि से निकालकर व्यापक जनआंदोलन के रूप में स्थापित कर दिया (**ब्राउन**, 1972)।

असहयोग आंदोलन से उत्पन्न राजनीतिक जागरूकता ने मुंगेर जिले में स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा प्रदान की। इसी विकसित जनचेतना के आधार पर सन् 1930 में प्रारंभ हुआ सविनय अवज्ञा आंदोलन जिले में व्यापक सामाजिक समर्थन प्राप्त करने में सफल रहा। महात्मा गांधी की दांडी यात्रा और नमक सत्याग्रह से प्रेरित होकर मुंगेर के स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जनसभाओं,

प्रभात फेरियों तथा स्वदेशी अभियानों का आयोजन किया। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, खादी का प्रचार और औपनिवेशिक कानूनों के विरुद्ध शांतिपूर्ण प्रतिरोध इस आंदोलन की प्रमुख विशेषताएँ थीं। स्थानीय नेतृत्व ने गाँव-गाँव जाकर लोगों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का प्रयास किया, जिसके परिणामस्वरूप किसानों, व्यापारियों, विद्यार्थियों और शिक्षित वर्ग की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। ब्रिटिश प्रशासन द्वारा गिरफ्तारियों और सभाओं पर प्रतिबंध लगाए जाने के बावजूद आंदोलन की गति धीमी नहीं पड़ी, बल्कि जनता का विश्वास और अधिक दृढ़ हुआ कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता केवल संगठित जनसंघर्ष से ही प्राप्त की जा सकती है (**मेटकाफ एवं मेटकाफ**, 2006)।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रभाव से मुंगेर के ग्रामीण क्षेत्रों में राजनीतिक चेतना और अधिक सशक्त हुई। कृषि-प्रधान जिले होने के कारण किसानों ने स्वतंत्रता आंदोलन को अपने आर्थिक और सामाजिक संघर्ष से जोड़कर देखा। बढ़ते भूमि-कर, जमींदारी शोषण तथा औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों के कारण पहले से ही असंतुष्ट किसान अब राष्ट्रीय आंदोलन के सक्रिय सहभागी बनने लगे। स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं और किसान नेताओं ने ग्रामीण सभाओं के माध्यम से किसानों को संगठित किया तथा उन्हें यह विश्वास दिलाया कि राजनीतिक स्वतंत्रता सामाजिक न्याय और आर्थिक सुधार का मार्ग प्रशस्त करेगी। इसी प्रकार ग्रामीण युवाओं ने भी संदेशवाहक, स्वयंसेवक और आयोजक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन प्रयासों ने मुंगेर में स्वतंत्रता आंदोलन को ग्रामीण समाज तक गहराई से पहुँचाया और इसे वास्तविक जनआंदोलन का स्वरूप प्रदान किया (**गुहा**, 1983)।

ग्रामीण समाज की सक्रियता के साथ-साथ छात्र एवं युवा वर्ग ने भी आंदोलन को नई ऊर्जा प्रदान की। विद्यालयों और महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय विचारों के प्रचार, प्रभात फेरियों, सार्वजनिक सभाओं तथा स्वदेशी अभियानों में उल्लेखनीय योगदान दिया। युवा स्वयंसेवकों ने स्थानीय नेतृत्व और जनता के बीच समन्वय स्थापित किया तथा ग्रामीण क्षेत्रों में राजनीतिक जागरूकता फैलाने का कार्य किया। इसी अवधि में महिलाओं की भागीदारी भी निरंतर बढ़ी। महात्मा गांधी के आह्वान से प्रेरित होकर महिलाओं ने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, खादी के प्रचार, चरखा चलाने, जनसभाओं में भाग लेने तथा राष्ट्रीय कार्यक्रमों के आयोजन में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने केवल अपने परिवारों तक राष्ट्रीय विचारों को सीमित नहीं रखा, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी राष्ट्रीय चेतना के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इससे स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक सामाजिक आधार प्राप्त हुआ और यह स्पष्ट हुआ कि राष्ट्रीय संघर्ष समाज के सभी वर्गों की साझा जिम्मेदारी बन चुका था (**फोर्ब्स**, 1996)।

इन सभी आंदोलनों का चरम रूप सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में दिखाई देता है। महात्मा गांधी के "करो या मरो" के आह्वान ने मुंगेर जिले में अभूतपूर्व जनजागरण उत्पन्न किया। स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं, किसानों, विद्यार्थियों, महिलाओं और युवाओं ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध का प्रदर्शन किया। अनेक स्थानों पर जनसभाएँ, जुलूस और शांतिपूर्ण प्रदर्शन आयोजित किए गए, जबकि ब्रिटिश प्रशासन ने गिरफ्तारियाँ, पुलिस दमन और अन्य कठोर उपाय अपनाकर आंदोलन को दबाने का प्रयास किया। इसके बावजूद स्थानीय जनता का मनोबल कमजोर नहीं हुआ। राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी के बाद भी स्थानीय कार्यकर्ताओं ने आंदोलन को निरंतर जारी रखा तथा भूमिगत रहकर जनसंपर्क और संगठनात्मक गतिविधियों का संचालन किया। इस आंदोलन ने यह सिद्ध कर दिया कि मुंगेर में स्वतंत्रता की भावना केवल राजनीतिक नेतृत्व तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामान्य जनता की सामूहिक चेतना का अभिन्न अंग बन चुकी थी (**ताराचंद**, 1978)।

7. मुंगेर जिले के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी

मुंगेर जिले का स्वतंत्रता संग्राम केवल राष्ट्रीय आंदोलनों की स्थानीय अभिव्यक्ति नहीं था, बल्कि यह अनेक समर्पित स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग, नेतृत्व और संगठनात्मक क्षमता का भी परिणाम था। इस जिले के अनेक कार्यकर्ताओं ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यक्रमों को स्थानीय स्तर पर जन-आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया, जनसभाओं का आयोजन

किया तथा विदेशी शासन के विरुद्ध जनता को संगठित करने का निरंतर प्रयास किया। यद्यपि इनमें से अनेक सेनानियों का उल्लेख राष्ट्रीय इतिहास के मुख्य विमर्श में अपेक्षाकृत कम मिलता है, फिर भी स्थानीय इतिहास में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है (**सिंहा**, 2015)।

मुंगेर जिले के स्वतंत्रता सेनानियों ने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन जैसे विभिन्न राष्ट्रीय अभियानों में सक्रिय भागीदारी निभाई। उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध शांतिपूर्ण प्रतिरोध, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, खादी के प्रचार, राष्ट्रीय शिक्षा के समर्थन तथा जन-जागरण अभियानों को गति प्रदान की। अनेक स्थानीय नेताओं ने गाँव-गाँव जाकर जनता को स्वराज, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया। उनके प्रयासों से किसानों, विद्यार्थियों, व्यापारियों और महिलाओं का एक व्यापक सामाजिक आधार स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ता गया। इस प्रकार मुंगेर में स्वतंत्रता संघर्ष किसी एक वर्ग का आंदोलन न होकर सामूहिक जनसहभागिता का प्रतीक बन गया (**भारत सरकार**, 2007)।

जिले के अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने औपनिवेशिक शासन की दमनात्मक नीतियों का साहसपूर्वक सामना किया। राष्ट्रीय गतिविधियों में भाग लेने के कारण अनेक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया, कारावास का दंड दिया गया तथा आर्थिक और सामाजिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद उन्होंने अपने संघर्ष को जारी रखा और स्थानीय जनता का मनोबल बनाए रखा। विशेष रूप से 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मुंगेर के अनेक कार्यकर्ताओं ने भूमिगत रहकर राष्ट्रीय आंदोलन को जीवित रखा तथा प्रशासनिक दमन के बीच भी स्वतंत्रता का संदेश जनसामान्य तक पहुँचाया। उनके त्याग और साहस ने जिले में राष्ट्रीय चेतना को और अधिक सुदृढ़ किया।

मुंगेर जिले के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान केवल औपनिवेशिक शासन के विरोध तक सीमित नहीं था। उन्होंने स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता, स्वदेशी, शिक्षा और जन-जागरण जैसे मूल्यों को भी बढ़ावा दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी इनमें से अनेक कार्यकर्ता सामाजिक विकास, लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती तथा जनकल्याण के कार्यों से जुड़े रहे। इसलिए मुंगेर के स्वतंत्रता सेनानियों का इतिहास केवल व्यक्तिगत बलिदानों का इतिहास नहीं है, बल्कि यह स्थानीय समाज की राष्ट्रीय प्रतिबद्धता, लोकतांत्रिक चेतना और सामूहिक संघर्ष का भी सशक्त दस्तावेज है। इनके योगदान का सम्यक् अध्ययन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्षेत्रीय इतिहास को अधिक समृद्ध और संतुलित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

8. सामाजिक वर्गों की जनभागीदारी का विश्लेषण

स्वतंत्रता संग्राम की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण आधार भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों की व्यापक और समन्वित भागीदारी थी। मुंगेर जिला इसका एक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहाँ स्वतंत्रता आंदोलन किसी एक वर्ग या राजनीतिक संगठन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि किसानों, मजदूरों, विद्यार्थियों, महिलाओं, व्यापारियों, शिक्षकों, बुद्धिजीवियों तथा स्थानीय सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों ने अपनी-अपनी परिस्थितियों और क्षमताओं के अनुसार सक्रिय योगदान दिया। यही व्यापक जनसहभागिता स्वतंत्रता आंदोलन को स्थानीय स्तर पर सामाजिक वैधता प्रदान करती है तथा यह स्पष्ट करती है कि राष्ट्रीय आंदोलन की वास्तविक शक्ति समाज के विभिन्न वर्गों के सामूहिक प्रयासों में निहित थी (**गुहा**, 1983)।

मुंगेर की सामाजिक संरचना मुख्यतः कृषि पर आधारित थी, इसलिए किसानों की भूमिका सबसे अधिक प्रभावशाली रही। औपनिवेशिक शासन द्वारा लागू भू-राजस्व व्यवस्था, जमींदारी शोषण और आर्थिक असमानताओं ने किसानों को गहरे संकट में डाल दिया था। राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव से किसानों ने अपनी आर्थिक समस्याओं को राजनीतिक स्वतंत्रता के प्रश्न से जोड़ना प्रारम्भ किया। स्थानीय कांग्रेस कार्यकर्ताओं और किसान नेताओं ने ग्रामीण क्षेत्रों में जनसभाओं का आयोजन कर किसानों को संगठित किया तथा उन्हें यह समझाया कि स्वराज केवल राजनीतिक परिवर्तन नहीं, बल्कि आर्थिक न्याय और

सामाजिक सम्मान की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम है। परिणामस्वरूप किसानों ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, राष्ट्रीय आंदोलनों में सहभागिता तथा शांतिपूर्ण प्रतिरोध के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को मजबूत आधार प्रदान किया।

कृषकों के साथ-साथ मजदूर वर्ग ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई। मुंगेर में रेलवे, शिल्प एवं लघु उद्योगों से जुड़े श्रमिकों ने राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में सहयोग दिया। यद्यपि उनका संघर्ष आर्थिक अधिकारों से प्रारम्भ हुआ, किन्तु धीरे-धीरे उन्होंने यह अनुभव किया कि राजनीतिक स्वतंत्रता के बिना सामाजिक और आर्थिक न्याय संभव नहीं है। इस कारण अनेक मजदूर राष्ट्रीय सभाओं, हड़तालों और जन-जागरण अभियानों से जुड़े तथा स्थानीय नेतृत्व को सक्रिय समर्थन प्रदान किया। इससे स्वतंत्रता आंदोलन का सामाजिक आधार और अधिक व्यापक हुआ (**चंद्र**, 2016)।

विद्यार्थियों और युवा वर्ग ने मुंगेर में राष्ट्रीय आंदोलन के वैचारिक विस्तार में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत युवाओं ने राष्ट्रीय साहित्य, सार्वजनिक व्याख्यानों और राजनीतिक सभाओं से प्रेरणा लेकर स्वतंत्रता आंदोलन के प्रचार-प्रसार का दायित्व संभाला। प्रभात फेरियों, जनसभाओं, स्वदेशी अभियानों और ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंपर्क के माध्यम से उन्होंने राष्ट्रीय चेतना को समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचाया। इसी प्रकार महिलाओं ने भी सामाजिक परंपराओं की सीमाओं से बाहर निकलकर खादी के प्रचार, विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, धन-संग्रह तथा राष्ट्रीय कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता निभाई। उनकी उपस्थिति ने यह सिद्ध किया कि स्वतंत्रता संग्राम केवल पुरुषों का राजनीतिक अभियान नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज का राष्ट्रीय आंदोलन था।

व्यापारी वर्ग ने भी स्वतंत्रता आंदोलन को आर्थिक आधार प्रदान किया। स्थानीय व्यापारियों ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का समर्थन किया तथा स्वदेशी उत्पादों के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अनेक व्यापारियों ने राष्ट्रीय कार्यक्रमों के आयोजन में आर्थिक सहयोग दिया और स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहित किया। इससे राष्ट्रीय आंदोलन केवल राजनीतिक विचार तक सीमित न रहकर आर्थिक आत्मनिर्भरता के अभियान के रूप में भी विकसित हुआ।

शिक्षकों और बुद्धिजीवियों का योगदान मुंगेर में राजनीतिक चेतना के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण था। उन्होंने विद्यालयों, सार्वजनिक सभाओं तथा सामाजिक संगठनों के माध्यम से स्वतंत्रता, स्वराज, राष्ट्रीय एकता और लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रचार किया। उनके लेखन, भाषण और जनजागरण अभियानों ने शिक्षित वर्ग के साथ-साथ ग्रामीण समाज को भी राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी प्रकार स्थानीय सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों ने जाति, धर्म और भाषा की सीमाओं से ऊपर उठकर सामाजिक एकता और राष्ट्रीय सहयोग की भावना को मजबूत किया। इन संगठनों ने सार्वजनिक सभाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सेवा गतिविधियों के माध्यम से लोगों में राष्ट्रीय दायित्व का बोध विकसित किया।

9. ब्रिटिश सरकार की दमनात्मक नीतियाँ

मुंगेर जिले में स्वतंत्रता आंदोलन के विस्तार के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार ने जनसंगठन और राष्ट्रीय चेतना को नियंत्रित करने के लिए अनेक दमनात्मक नीतियाँ अपनाईं। औपनिवेशिक प्रशासन का उद्देश्य केवल राजनीतिक गतिविधियों को रोकना नहीं था, बल्कि जनता में भय का वातावरण उत्पन्न कर राष्ट्रीय आंदोलन की गति को कमजोर करना भी था। जैसे-जैसे मुंगेर में असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन का प्रभाव बढ़ता गया, प्रशासन ने स्थानीय नेताओं, कांग्रेस कार्यकर्ताओं और सक्रिय स्वयंसेवकों पर कड़ी निगरानी रखनी प्रारम्भ कर दी। राष्ट्रीय सभाओं पर प्रतिबंध लगाए गए, जुलूसों को बलपूर्वक रोका गया तथा आंदोलन से जुड़े व्यक्तियों को बिना पर्याप्त न्यायिक प्रक्रिया के गिरफ्तार किया गया। इन कार्रवाइयों का उद्देश्य स्थानीय जनता को स्वतंत्रता आंदोलन से दूर रखना था, किंतु इसके विपरीत इन दमनात्मक उपायों ने जनता के भीतर ब्रिटिश शासन के प्रति असंतोष को और अधिक तीव्र कर दिया (**जुडिथ ब्राउन**, 1985)।

ब्रिटिश प्रशासन द्वारा सबसे अधिक प्रयोग किया गया उपाय व्यापक स्तर पर गिरफ्तारियाँ करना था। मुंगेर जिले में राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व करने वाले अनेक कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा ग्रामीण नेताओं को विभिन्न अवसरों पर कारावास का दंड दिया गया। कई मामलों में बिना मुकदमा चलाए ही लोगों को निरुद्ध कर दिया गया, जिससे स्थानीय नेतृत्व को कमजोर किया जा सके। इसके साथ ही पुलिस बल का प्रयोग कर जनसभाओं, प्रभात फेरियों और शांतिपूर्ण प्रदर्शनों को बलपूर्वक समाप्त किया गया। लाठीचार्ज, तलाशी अभियान तथा ग्रामीण क्षेत्रों में पुलिस गश्त बढ़ाकर प्रशासन ने आंदोलनकारियों को भयभीत करने का प्रयास किया। इन कठोर उपायों के बावजूद जनता का मनोबल कमजोर नहीं हुआ, बल्कि स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रति उसका संकल्प और अधिक दृढ़ होता गया (**मूर**, 1966)।

औपनिवेशिक शासन ने आर्थिक दमन को भी एक प्रभावी हथियार के रूप में प्रयोग किया। आंदोलन में सक्रिय व्यक्तियों पर आर्थिक जुर्माने लगाए गए, उनकी संपत्तियाँ जब्त की गईं तथा कई परिवारों को प्रशासनिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। जिन ग्रामीणों पर राष्ट्रीय आंदोलन में सहयोग देने का संदेह होता, उन्हें अतिरिक्त करों, राजस्व वसूली तथा प्रशासनिक दबाव का सामना करना पड़ता था। इन उपायों का उद्देश्य आंदोलन को आर्थिक रूप से कमजोर करना था, किन्तु स्थानीय समाज ने सामूहिक सहयोग और पारस्परिक सहायता के माध्यम से इन चुनौतियों का सामना किया।

ब्रिटिश सरकार ने प्रेस और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर भी कठोर नियंत्रण स्थापित किया। राष्ट्रीय विचारों का प्रचार करने वाले समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं पर सेंसरशिप लागू की गई तथा राष्ट्रवादी साहित्य के प्रकाशन और वितरण पर प्रतिबंध लगाए गए। अनेक समाचार-पत्रों की प्रतियाँ जब्त की गईं और संपादकों को चेतावनी अथवा दंडित किया गया। इसके बावजूद राष्ट्रीय साहित्य, हस्तलिखित पर्चों और मौखिक प्रचार के माध्यम से स्वतंत्रता का संदेश मुंगेर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों तक निरंतर पहुँचता रहा। इससे स्पष्ट होता है कि औपनिवेशिक दमन जनता की राष्ट्रीय चेतना को दबाने में पूर्णतः सफल नहीं हो सका। इसके विपरीत, इन दमनात्मक नीतियों ने मुंगेर जिले में जनसहभागिता को और अधिक संगठित किया तथा स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक सामाजिक समर्थन प्रदान किया।

10. मुंगेर जिले में स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव

मुंगेर जिले में स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव केवल ब्रिटिश शासन के विरुद्ध राजनीतिक प्रतिरोध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने जिले के सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक जीवन में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए। राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरणों में स्थानीय जनता की सक्रिय भागीदारी ने लोकतांत्रिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता तथा नागरिक उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ किया। आंदोलन के परिणामस्वरूप मुंगेर में राजनीतिक जागरूकता का अभूतपूर्व विस्तार हुआ और सामान्य नागरिकों ने यह अनुभव किया कि शासन और प्रशासन से संबंधित प्रश्न केवल शासकों का विषय नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी भी हैं। यही चेतना आगे चलकर स्वतंत्र भारत में लोकतांत्रिक भागीदारी का आधार बनी (**कोठारी**, 1970)।

स्वतंत्रता आंदोलन ने मुंगेर के सामाजिक ढाँचे में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। आंदोलन में किसानों, मजदूरों, विद्यार्थियों, महिलाओं, व्यापारियों तथा शिक्षित वर्ग की संयुक्त भागीदारी ने सामाजिक सहयोग और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित किया। जाति, धर्म और आर्थिक स्थिति जैसी पारंपरिक सीमाएँ अनेक अवसरों पर राष्ट्रीय उद्देश्य के सामने गौण होती दिखाई दीं। महिलाओं की सार्वजनिक जीवन में बढ़ती सहभागिता, युवाओं की सक्रिय भूमिका तथा ग्रामीण समाज की राजनीतिक जागरूकता ने सामाजिक परिवर्तन की नई दिशा निर्धारित की। इससे यह स्पष्ट हुआ कि स्वतंत्रता संग्राम केवल राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने का संघर्ष नहीं था, बल्कि सामाजिक पुनर्जागरण और नागरिक चेतना का भी आंदोलन था (**बोस एवं जालाल**, 2004)।

राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव से मुंगेर में राष्ट्रीय चेतना का भी उल्लेखनीय विकास हुआ। स्वदेशी, स्वावलंबन, सत्याग्रह और अहिंसा जैसे गांधीवादी आदर्श स्थानीय समाज में व्यापक रूप से स्वीकार किए गए। शिक्षण

संस्थानों, सार्वजनिक सभाओं, सामाजिक संगठनों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, लोकतंत्र और सामाजिक न्याय के विचारों का प्रसार हुआ। इन प्रयासों ने स्थानीय जनता में भारतीय राष्ट्र के प्रति आत्मीयता और उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ किया। परिणामस्वरूप स्वतंत्रता की आकांक्षा केवल राजनीतिक नारा न रहकर सामाजिक और नैतिक दायित्व के रूप में स्थापित हुई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी मुंगेर जिले में राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत विभिन्न रूपों में दिखाई देती है। स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान ने नई पीढ़ी को लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता के प्रति प्रेरित किया। जिले में स्थापित स्मारक, स्मृति समारोह, शैक्षणिक संस्थान तथा स्थानीय इतिहास से संबंधित अध्ययन आज भी उस संघर्ष की याद दिलाते हैं, जिसने भारतीय लोकतंत्र की आधारशिला को मजबूत किया। इस प्रकार मुंगेर जिले का स्वतंत्रता आंदोलन केवल औपनिवेशिक शासन की समाप्ति का इतिहास नहीं है, बल्कि यह नागरिक चेतना, सामाजिक परिवर्तन और लोकतांत्रिक परंपराओं के विकास का भी महत्वपूर्ण अध्याय है। इसलिए मुंगेर के स्वतंत्रता आंदोलन का अध्ययन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के क्षेत्रीय आयामों को समझने और स्थानीय इतिहास की भूमिका का समुचित मूल्यांकन करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

11. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मुंगेर जिले की भूमिका केवल राष्ट्रीय आंदोलनों के स्थानीय विस्तार तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह व्यापक जनसहभागिता, राजनीतिक जागरूकता और सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण केंद्र भी था। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में बंग-भंग एवं स्वदेशी आंदोलन से विकसित हुई राष्ट्रीय चेतना ने होम रूल आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अधिक संगठित और प्रभावशाली स्वरूप ग्रहण किया। इन आंदोलनों में जिले के किसानों, मजदूरों, विद्यार्थियों, महिलाओं, व्यापारियों, शिक्षकों तथा स्थानीय सामाजिक संगठनों की सक्रिय भागीदारी ने स्वतंत्रता संघर्ष को जन-आधारित आंदोलन के रूप में स्थापित किया। यह अध्ययन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि मुंगेर में स्वतंत्रता आंदोलन केवल कुछ राजनीतिक नेताओं का प्रयास नहीं था, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों की सामूहिक चेतना और सहभागिता का परिणाम था **(पाण्डेय, 1982)**।

शोध के विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि औपनिवेशिक शासन की दमनात्मक नीतियाँ—जैसे गिरफ्तारियाँ, पुलिस दमन, आर्थिक दंड, संपत्ति की जब्ती तथा प्रेस पर नियंत्रण—जनता के मनोबल को कमजोर करने में अपेक्षित रूप से सफल नहीं हो सकीं। इसके विपरीत, इन नीतियों ने स्थानीय समाज में राष्ट्रीय एकता, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की आकांक्षा को और अधिक सुदृढ़ किया। मुंगेर जिले के स्वतंत्रता सेनानियों तथा सामान्य नागरिकों ने कठिन परिस्थितियों में भी अपने संघर्ष को जारी रखा और राष्ट्रीय आंदोलन की निरंतरता बनाए रखी। इससे यह सिद्ध होता है कि स्वतंत्रता संग्राम की वास्तविक शक्ति जनता के संगठित प्रतिरोध और राष्ट्रीय प्रतिबद्धता में निहित थी **(सर्वपल्ली गोपाल, 1975)**।

प्रस्तुत शोध का एक महत्वपूर्ण योगदान यह है कि यह राष्ट्रीय इतिहास के साथ-साथ क्षेत्रीय इतिहास के महत्व को भी रेखांकित करता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर उपलब्ध अधिकांश अध्ययन राष्ट्रीय नेतृत्व और प्रमुख राजनीतिक घटनाओं पर केंद्रित रहे हैं, जबकि मुंगेर जैसे जिलों की स्थानीय जनभागीदारी पर अपेक्षाकृत सीमित कार्य हुआ है। यह अध्ययन उस शोध-अंतर (Research Gap) को आंशिक रूप से भरने का प्रयास करता है तथा यह स्थापित करता है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की व्यापक सफलता के पीछे स्थानीय समाज, क्षेत्रीय नेतृत्व और जनसंगठनों का योगदान समान रूप से महत्वपूर्ण था। इस दृष्टि से मुंगेर जिले का अध्ययन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के विकेंद्रीकृत और जन-आधारित स्वरूप को समझने में उपयोगी सिद्ध होता है।

यद्यपि इस अध्ययन में उपलब्ध अभिलेखीय स्रोतों, जिला गजेटियरों तथा प्रकाशित साहित्य का समुचित उपयोग किया गया है, फिर भी कुछ सीमाएँ विद्यमान हैं। अनेक स्थानीय अभिलेख समय के साथ नष्ट हो

चुके हैं तथा कुछ स्वतंत्रता सेनानियों और ग्रामीण आंदोलनों से संबंधित सूचनाएँ मौखिक परंपराओं तक सीमित हैं। भविष्य में यदि अप्रकाशित अभिलेखों, निजी पत्रों, स्थानीय समाचार-पत्रों तथा स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों से प्राप्त मौखिक इतिहास का व्यवस्थित अध्ययन किया जाए, तो मुंगेर जिले के स्वतंत्रता आंदोलन का और अधिक व्यापक तथा प्रामाणिक इतिहास सामने आ सकता है। इस प्रकार यह शोध न केवल मुंगेर जिले के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्थापित करता है, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के क्षेत्रीय इतिहास पर भविष्य के अनुसंधानों के लिए भी एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

संदर्भ

1. चौधरी, पी. सी. (1960). *बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स: मुंगेर* (Bihar District Gazetteers: Munger). पटना: बिहार सरकार।
2. सरकार, सुमित. (1983). *आधुनिक भारत: 1885–1947* (Modern India: 1885–1947). नई दिल्ली: मैकमिलन इंडिया लिमिटेड।
3. ग्रोवर, बी. एल., & ग्रोवर, एस. (2018). *आधुनिक भारत का इतिहास: एक नवीन मूल्यांकन* (New Look at Modern Indian History). नई दिल्ली: एस. चंद एंड कंपनी प्रा. लि.
4. स्पीयर, पर्सिवल. (1990). *भारत का इतिहास: 1858–1947* (अनूदित संस्करण). नई दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन।
5. मजूमदार, आर. सी. (1963). *History of the Freedom Movement in India* (खंड 3). कोलकाता: फ़र्मा के. एल. मुखोपाध्याय.
6. मिश्र, के. के. (1988). *Bihar Through the Ages*. पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी.
7. गोयल, एस. एल. (1988). *Research Methodology: Methods and Techniques*. नई दिल्ली: दीप एंड दीप पब्लिकेशन्स।
8. महाजन, वी. डी. (2007). *Modern Indian History: From 1707 to the Present Day*. नई दिल्ली: एस. चंद एंड कंपनी लिमिटेड।
9. चंद्र, बिपन., मुखर्जी, मृदुला., मुखर्जी, आदित्य., महाजन, सुचेता., पाणिक्कर, के. एन., & महाजन, सर्चना. (2016). *भारत का स्वतंत्रता संग्राम*. नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
10. ब्राउन, जूडिथ एम. (1972). *Gandhi's Rise to Power: Indian Politics 1915–1922*. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. चंद्र, बिपन. (2016). *भारत का स्वतंत्रता संग्राम*. नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
12. सरकार, सुमित. (1973). *The Swadeshi Movement in Bengal, 1903–1908*. नई दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस।
13. सील, अनिल. (1968). *The Emergence of Indian Nationalism*. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
14. फोर्ब्स, जेराल्डीन. (1996). *Women in Modern India*. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
15. गुहा, रणजीत. (1983). *Elementary Aspects of Peasant Insurgency in Colonial India*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

16. मेटकाफ, बारबरा डी., & मेटकाफ, थॉमस आर. (2006). *A Concise History of Modern India* (2nd ed.). कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
17. ताराचंद. (1978). *भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास* (खंड 4). नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार.
18. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय. (2007). *Dictionary of Martyrs: India's Freedom Struggle (1857–1947)* (Vols. 1–5). नई दिल्ली: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण.
19. सिंहा, आर. के. (2015). *Bihar mein Swatantrata Andolan* [बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन]. पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी.
20. चंद्र, बिपन. (2016). *भारत का स्वतंत्रता संग्राम*. नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
21. गुहा, रणजीत. (1983). *Elementary Aspects of Peasant Insurgency in Colonial India*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
22. ब्राउन, जूडिथ एम. (1985). *Gandhi and Civil Disobedience: The Mahatma in Indian Politics, 1928–1934*. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
23. मूर, बैरिंगटन. (1966). *Social Origins of Dictatorship and Democracy*. बोस्टन: बीकन प्रेस.
24. बोस, सुगत, & जालाल, आयशा. (2004). *Modern South Asia: History, Culture, Political Economy* (2nd ed.). लंदन: रूटलेज.
25. कोठारी, रजनी. (1970). *Politics in India*. नई दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन।
26. गोपाल, सर्वपल्ली. (1975). *Jawaharlal Nehru: A Biography* (Vol. 1). नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
27. पाण्डेय, बिन्देश्वरी प्रसाद. (1982). *The Indian National Movement, 1885–1947*. नई दिल्ली: मैकमिलन इंडिया लिमिटेड.